



SWARNRUDRA: An International Multidisciplinary Journal of Academic Research

<https://swarnrudrajournal.com/>

e-ISSN:3140-0108

Publisher:Swarnrudra Publication

Vol.1, Issue 2, August-September 2026

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23362058>



RESEARCHARTICLE

झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण में NGOs की भूमिका

1*अनामिका हेम्ब्रोम , 2 डॉ. संजीव कुमार सिन्हा 

¹ शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, एस्केएमयू, दुमका, झारखंड, भारत

² सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस्केएमयू, दुमका, झारखंड, भारत

सारांश -

भारत में महिला सशक्तिकरण सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है। आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में यह प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि वे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा संस्थागत स्तर पर अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करती हैं। झारखण्ड एक प्रमुख आदिवासी बहुल राज्य है, जहाँ आदिवासी महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए शिक्षा, रोजगार, आजीविका, स्वास्थ्य, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक सहभागिता तथा राजनीतिक भागीदारी जैसे आयामों का अध्ययन आवश्यक है। इस संदर्भ में गैर-सरकारी संगठन (NGOs) समुदाय और संस्थागत व्यवस्थाओं के बीच महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सकते हैं। वे शिक्षा, कौशल विकास, स्वयं सहायता समूहों, आजीविका संवर्धन, स्वास्थ्य एवं पोषण, वित्तीय समावेशन, कानूनी जागरूकता तथा नेतृत्व विकास जैसे क्षेत्रों में हस्तक्षेप करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है और मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें सरकारी दस्तावेजों, जनगणना संबंधी आँकड़ों, शोध-पत्रों तथा NGO द्वारा प्रकाशित कार्यक्रम संबंधी दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। झारखण्ड पर उपलब्ध empirical research से संकेत मिलता है कि स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी आदिवासी महिलाओं के आत्मविश्वास, स्वायत्तता, ज्ञान, कौशल तथा जीवन-गुणवत्ता से सकारात्मक रूप से जुड़ी है। इसी प्रकार राजनीतिक सहभागिता, सरकारी योजनाओं की जानकारी और नेतृत्व क्षमता में भी सुधार देखा गया है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि NGOs की भूमिका केवल सेवा-प्रदान तक सीमित न होकर आदिवासी महिलाओं की सामूहिक क्षमता, agency और सामाजिक सहभागिता को मजबूत करने वाली होनी चाहिए। साथ ही, वित्तीय संसाधन, बाजार तक पहुँच, डिजिटल विभाजन, संस्थागत समन्वय और कार्यक्रमों की स्थिरता जैसी चुनौतियों को दूर करना आवश्यक है।

मुख्य शब्द:

आदिवासी महिला, महिला सशक्तिकरण, गैर-सरकारी संगठन, झारखण्ड, स्वयं सहायता समूह, आजीविका, सामाजिक विकास।

ARTICLE HISTORY:

Received: 25.08.2026

Revised: 05.09.2026

Accepted: 15.09.2026

Published Online: 25.09.2026

CITATION

Anamika Hembrom., (2026).

झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण में NGOs की भूमिका.

SWARNRUDRA: An

International Multidisciplinary

Journal of Academic Research,

1(2), 92-105.

<https://doi.org/10.5281/zenodo.23362058>

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण समकालीन सामाजिक विकास विमर्श का एक महत्वपूर्ण विषय है। किसी भी समाज के समावेशी एवं सतत विकास का आकलन केवल आर्थिक वृद्धि के आधार पर नहीं किया जा सकता, बल्कि यह भी देखना आवश्यक है कि महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, संसाधनों, निर्णय-निर्माण और सार्वजनिक जीवन में कितने अवसर प्राप्त हैं। विशेष रूप से आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में सशक्तिकरण का प्रश्न केवल आर्थिक संसाधनों तक पहुँच का प्रश्न नहीं है, बल्कि सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक अधिकार, सामुदायिक सहभागिता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और व्यक्तिगत agency से भी जुड़ा हुआ है।

झारखण्ड भारत के प्रमुख आदिवासी बहुल राज्यों में से एक है। राज्य में संताल, मुंडा, उराँव, हो, खड़िया, भूमिज, पहाड़िया सहित अनेक जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। जनगणना 2011 की अनुसूचित जनजाति संबंधी तालिकाएँ झारखण्ड में जनजातीय आबादी की शिक्षा, आयु, लिंग तथा अन्य सामाजिक विशेषताओं को अलग-अलग स्तरों पर उपलब्ध कराती हैं। विशेष रूप से अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के अध्ययन के लिए जनगणना की ST-08 तालिका उपयोगी आधार प्रदान करती है।

आदिवासी महिलाओं के सामने शिक्षा एवं कौशल के अवसरों की कमी, सीमित रोजगार अवसर, गरीबी, स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी समस्याएँ, बाजार तक सीमित पहुँच तथा सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। झारखण्ड में आदिवासी महिलाओं की शिक्षा एवं कौशल अर्जन पर हालिया अध्ययन भी इन बाधाओं को रेखांकित करते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। NGOs स्थानीय समुदायों के साथ सीधे काम करने, स्थानीय आवश्यकताओं को समझने और समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम होते हैं। भारत सरकार का जनजातीय कार्य मंत्रालय भी NGO partnerships को आदिवासी समुदायों तक शिक्षा, आजीविका और विकास संबंधी अवसर पहुँचाने के एक माध्यम के रूप में मान्यता देता है।

झारखण्ड में NGOs द्वारा महिला स्वयं सहायता समूहों, कौशल विकास, आजीविका, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन तथा नेतृत्व विकास से संबंधित अनेक गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। उदाहरण के लिए PRADAN की झारखण्ड संबंधी पहल में महिला संस्थाओं, स्वयं सहायता समूहों और कृषि एवं गैर-कृषि आजीविका को सुदृढ़ करने पर जोर दिया गया है। उसके SAFALTA कार्यक्रम में महिला-नेतृत्व वाली सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का लक्ष्य रखा गया था। इसी प्रकार PRAVAH झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों, बैंक लिंकेज, वित्तीय सेवाओं, आजीविका, नेतृत्व, स्वास्थ्य एवं पोषण जैसे क्षेत्रों में काम करने की जानकारी देता है।

झारखण्ड में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

झारखण्ड की सामाजिक संरचना में आदिवासी समुदायों की महत्वपूर्ण भूमिका है। राज्य की आदिवासी महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति, सामाजिक सहभागिता तथा निर्णय लेने की क्षमता जैसे विभिन्न संकेतकों का संयुक्त अध्ययन आवश्यक है। जनगणना 2011 में झारखण्ड की अनुसूचित जनजातियों के लिए शिक्षा संबंधी आँकड़े लिंग एवं आयु के आधार पर उपलब्ध हैं। इससे आदिवासी पुरुषों और महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के तुलनात्मक अध्ययन की संभावना बनती है।

शिक्षा एवं साक्षरता

शिक्षा महिला सशक्तिकरण की आधारभूत शर्त है। शिक्षा महिलाओं को केवल पढ़ने-लिखने की क्षमता नहीं देती, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों, सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। झारखण्ड की अनुसूचित जनजाति आबादी के लिए Census 2011 में शैक्षिक स्तर के विस्तृत आँकड़े उपलब्ध हैं, जिनमें महिला और पुरुष दोनों के लिए साक्षरता एवं शिक्षा के विभिन्न स्तर शामिल हैं। हालाँकि शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है, लेकिन आदिवासी महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करने में दूरी, गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक मान्यताएँ तथा कौशल प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता जैसी बाधाएँ बनी हुई हैं। हालिया अध्ययन भी झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं में शिक्षा और कौशल अर्जन की बाधाओं की ओर संकेत करता है।

रोजगार एवं आजीविका

ग्रामीण आदिवासी अर्थव्यवस्था में महिलाएँ कृषि, वनोपज संग्रह, पशुपालन, घरेलू उत्पादन और अन्य अनौपचारिक गतिविधियों में योगदान देती हैं। हालाँकि उनके श्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा पारिवारिक या अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में होने के कारण उसकी आर्थिक पहचान और प्रत्यक्ष आय में रूपांतरण हमेशा नहीं हो पाता। इस स्थिति में कौशल विकास, मूल्य संवर्धन, बाजार संपर्क और सामूहिक उद्यम महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में सहायक हो सकते हैं। NGOs इस प्रक्रिया में प्रशिक्षण और handholding support प्रदान कर सकते हैं।

स्वास्थ्य एवं पोषण

स्वास्थ्य और पोषण महिला सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण आधार हैं। आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं तक भौगोलिक पहुँच, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता तथा पोषण संबंधी जानकारी जैसी समस्याएँ महिलाओं की स्थिति को प्रभावित कर सकती हैं। NGOs स्वास्थ्य शिविरों, पोषण

जागरूकता, स्वच्छता और सामुदायिक स्वास्थ्य गतिविधियों के माध्यम से इस क्षेत्र में पूरक भूमिका निभा सकते हैं। उदाहरण के लिए PRAVAH झारखण्ड में स्वास्थ्य एवं पोषण कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान देने की जानकारी देता है।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक स्थिति को प्रभावित करता है। नियमित आय, बचत, ऋण तक पहुँच और उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण महिलाओं की आर्थिक agency को मजबूत कर सकते हैं। स्वयं सहायता समूह इस संदर्भ में महत्वपूर्ण संस्थागत माध्यम बन सकते हैं। झारखण्ड में SHGs पर उपलब्ध शोध आर्थिक स्थिरता, बचत व्यवहार, वित्तीय संसाधनों तक पहुँच और निर्णय लेने की क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध की ओर संकेत करता है।

सामाजिक स्थिति

आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति उनके परिवार, समुदाय और स्थानीय संस्थाओं में सहभागिता से जुड़ी है। शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामूहिक संगठन महिलाओं की सामाजिक आवाज को मजबूत कर सकते हैं। स्वयं सहायता समूह केवल वित्तीय संस्था नहीं बल्कि सामुदायिक सहभागिता और collective action के मंच के रूप में भी काम कर सकते हैं।

राजनीतिक सहभागिता

महिला सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आयाम राजनीतिक सहभागिता है। पंचायतों एवं स्थानीय संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी से उन्हें सार्वजनिक निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ने का अवसर मिलता है। झारखण्ड पर केंद्रित एक हालिया empirical study में पाया गया कि NRLM के अंतर्गत SHG participation के बाद tribal women में मतदान अधिकारों तक पहुँच, सरकारी योजनाओं की जानकारी, राजनीतिक जागरूकता, चुनावी भागीदारी और leadership positions से संबंधित सकारात्मक परिवर्तन देखे गए।

निर्णय लेने में भागीदारी

परिवार में निर्णय लेने की क्षमता महिला empowerment का महत्वपूर्ण संकेतक है। आर्थिक संसाधनों तक पहुँच, शिक्षा, सामूहिक संगठन और सामाजिक नेटवर्क महिलाओं की bargaining power को बढ़ा सकते हैं। इसलिए NGOs की भूमिका को केवल आय बढ़ाने के आधार पर नहीं बल्कि इस आधार पर भी देखना चाहिए कि उनके कार्यक्रम महिलाओं की agency और निर्णय-निर्माण क्षमता को कितना मजबूत करते हैं।

तालिका 1: झारखण्ड में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के प्रमुख संकेतक

संकेतक	प्रमुख स्थिति/आयाम	सशक्तिकरण से संबंध
शिक्षा एवं साक्षरता	शैक्षिक अवसरों में क्षेत्रीय एवं लैंगिक असमानताएँ	ज्ञान एवं अधिकार जागरूकता
रोजगार एवं आजीविका	कृषि, वनोपज एवं अनौपचारिक कार्यों में सहभागिता	आय एवं आर्थिक स्वतंत्रता
स्वास्थ्य एवं पोषण	स्वास्थ्य सेवाओं एवं जागरूकता की आवश्यकता	स्वस्थ एवं उत्पादक जीवन
आर्थिक स्थिति	बचत, ऋण एवं संसाधनों तक पहुँच महत्वपूर्ण	आर्थिक agency
सामाजिक स्थिति	सामुदायिक एवं पारिवारिक भूमिका महत्वपूर्ण	सामाजिक प्रतिष्ठा
राजनीतिक सहभागिता	स्थानीय संस्थाओं में भागीदारी का महत्व	नेतृत्व एवं निर्णय-निर्माण
निर्णय लेने में भागीदारी	परिवार एवं समुदाय में agency महत्वपूर्ण	वास्तविक सशक्तिकरण

स्रोत: Census of India (2011) तथा संबंधित empirical studies के आधार पर लेखक का विश्लेषण।

महिला सशक्तिकरण: अवधारणा एवं सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को ऐसी क्षमता, संसाधन और अवसर उपलब्ध कराना है, जिनके माध्यम से वे अपने जीवन से जुड़े

निर्णय स्वयं ले सकें और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं में प्रभावी रूप से भाग ले सकें। सशक्तिकरण को केवल किसी योजना का लाभ प्राप्त करने के रूप में नहीं बल्कि **agency, choice और control** के विस्तार के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ एवं अवधारणा

सशक्तिकरण की प्रक्रिया में तीन प्रमुख तत्व महत्वपूर्ण हैं—संसाधनों तक पहुँच, निर्णय लेने की क्षमता और उपलब्ध अवसरों को वास्तविक उपलब्धियों में परिवर्तित करने की क्षमता। इस दृष्टि से महिला empowerment आर्थिक आय से आगे बढ़कर सामाजिक एवं राजनीतिक agency का प्रश्न बन जाता है।

आदिवासी महिला सशक्तिकरण

आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में सशक्तिकरण का स्वरूप विशिष्ट है। यहाँ लैंगिक असमानता के साथ-साथ गरीबी, भौगोलिक अलगाव, शिक्षा की कमी, बाजार से दूरी और संस्थागत सेवाओं तक सीमित पहुँच जैसे तत्व भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए आदिवासी महिलाओं के empowerment के लिए स्थानीय संस्कृति एवं समुदाय की भागीदारी को ध्यान में रखना आवश्यक है।

आर्थिक सशक्तिकरण

आर्थिक सशक्तिकरण का संबंध आय, रोजगार, संपत्ति, बचत, ऋण और वित्तीय निर्णयों तक पहुँच से है। SHGs तथा livelihood programmes इस दिशा में महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं।

सामाजिक सशक्तिकरण

सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं को परिवार एवं समुदाय में सम्मान, आवाज और सहभागिता प्रदान करता है। सामूहिक संगठन महिलाओं को अकेले की अपेक्षा अधिक प्रभावी सामुदायिक bargaining power प्रदान कर सकता है।

राजनीतिक सशक्तिकरण

राजनीतिक empowerment का अर्थ केवल चुनाव में मतदान करना नहीं बल्कि राजनीतिक जागरूकता, सार्वजनिक संस्थाओं में भागीदारी, नेतृत्व और निर्णय-निर्माण में सक्रिय भूमिका से है।

मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण

आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, self-efficacy और autonomy इसके प्रमुख तत्व हैं। झारखण्ड की tribal women पर Mahato और Jha के अध्ययन में SHG participation के बाद self-esteem, self-confidence, self-efficacy, autonomy, knowledge तथा skills में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया।

महिला सशक्तिकरण के प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण

नायला कबीर का संसाधन-एजेंसी-उपलब्धि दृष्टिकोण महिला empowerment को resources, agency और achievements के परस्पर संबंध के माध्यम से समझने में उपयोगी है। अमर्त्य सेन का Capability Approach यह समझने में सहायता करता है कि वास्तविक विकास केवल संसाधनों की उपलब्धता नहीं बल्कि व्यक्ति की वास्तविक capabilities और choices के विस्तार से संबंधित है। इन दोनों दृष्टिकोणों को NGOs के संदर्भ में लागू करने पर यह देखा जा सकता है कि किसी महिला को केवल ऋण या प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं है; महत्वपूर्ण यह है कि वह उस संसाधन का उपयोग करके अपने जीवन में वास्तविक विकल्प और निर्णय क्षमता विकसित कर पाती है या नहीं।

गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की अवधारणा एवं भूमिका

गैर-सरकारी संगठन ऐसे स्वैच्छिक एवं गैर-लाभकारी संस्थागत संगठन हैं जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य और विकास

संबंधी क्षेत्रों में कार्य करते हैं। ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों में इनका महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि ये समुदाय के अपेक्षाकृत निकट रहकर कार्य कर सकते हैं।

गैर-सरकारी संगठनों का अर्थ एवं स्वरूप

NGOs को राज्य और बाजार के बीच स्थित civil society institutions के रूप में देखा जा सकता है। इनका उद्देश्य केवल सेवा उपलब्ध कराना नहीं बल्कि community mobilisation, awareness और capacity building भी हो सकता है।

भारत में NGOs का विकास

भारत में स्वैच्छिक संगठनों की परंपरा पुरानी है, लेकिन स्वतंत्रता के बाद विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में NGOs की भूमिका बढ़ी। उदारीकरण के बाद civil society organisations ने विकास कार्यक्रमों में भी महत्वपूर्ण भूमिका ग्रहण की।

आदिवासी क्षेत्रों के विकास में NGOs की भूमिका

आदिवासी क्षेत्रों में NGOs शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कौशल विकास और अधिकार जागरूकता के माध्यम से काम करते हैं। भारत सरकार का जनजातीय कार्य मंत्रालय भी NGO partnerships के माध्यम से tribal communities तक sustainable development, education और livelihood opportunities पहुँचाने की व्यवस्था रखता है।

महिला विकास में NGOs का योगदान

महिला विकास के क्षेत्र में NGOs मुख्यतः:

- स्वयं सहायता समूह निर्माण,
- कौशल विकास,
- वित्तीय साक्षरता,
- आजीविका,
- स्वास्थ्य,
- कानूनी जागरूकता,
- नेतृत्व विकास,
- सामुदायिक संगठन

जैसे क्षेत्रों में कार्य कर सकते हैं।

सरकार एवं NGOs के बीच समन्वय

NGOs सरकार का विकल्प नहीं हैं। उनकी प्रभावी भूमिका तब अधिक मजबूत होती है जब वे सरकारी योजनाओं, पंचायत संस्थाओं और स्थानीय समुदायों के साथ समन्वय करते हैं। JSLPS स्वयं सामाजिक mobilization एवं livelihood promotion के लिए राज्य स्तर पर कार्य करने वाली संस्था है।

झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण में NGOs की भूमिका

शिक्षा एवं साक्षरता के क्षेत्र में भूमिका

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का मूल आधार है। NGOs साक्षरता अभियान, बालिका शिक्षा, dropout reduction, डिजिटल साक्षरता तथा awareness programmes के माध्यम से महिलाओं और लड़कियों को शिक्षा से जोड़ सकते हैं। झारखण्ड में Scheduled Tribe girls के educational development में NGOs की भूमिका पर पूर्व अध्ययन यह दर्शाता है कि NGOs दूरस्थ और हाशिए के समुदायों तक पहुँच बनाने में सहायक हो सकते हैं।

कौशल विकास एवं प्रशिक्षण में भूमिका

आदिवासी महिलाओं के लिए स्थानीय संसाधनों से जुड़े कौशल—कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई, बागवानी आदि—आय के स्रोत बन सकते हैं। NGOs प्रशिक्षण के साथ handholding support उपलब्ध कराकर महिलाओं को कौशल से रोजगार या उद्यमिता की ओर ले जा सकते हैं।

रोजगार एवं आजीविका के अवसरों के विकास में भूमिका

आजीविका कार्यक्रम महिला empowerment का प्रमुख माध्यम हैं। PRADAN के SAFALTA programme में SHG आधारित संस्थाओं के माध्यम से farm और off-farm livelihoods तथा income enhancement पर ध्यान दिया गया। कार्यक्रम में महिलाओं की सामुदायिक संस्थाओं और livelihood interventions को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया था।

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

SHGs महिलाओं को बचत, ऋण, सामूहिक निर्णय और सामाजिक संपर्क का मंच प्रदान करते हैं। झारखण्ड की tribal women पर किए गए empirical research से psychological empowerment में सकारात्मक परिवर्तन का संकेत मिलता है। इसलिए SHG को केवल microfinance mechanism के रूप में नहीं बल्कि **collective agency** विकसित करने वाले सामाजिक संस्थान के रूप में समझना चाहिए।

आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं वित्तीय समावेशन

NGOs महिलाओं को बैंकिंग, बचत, ऋण और वित्तीय साक्षरता से जोड़ सकते हैं। PRAVAH द्वारा झारखण्ड में women SHGs के लिए bank linkages, credit और livelihood activities पर कार्य करने की जानकारी दी गई है।

स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में भूमिका

NGOs स्वास्थ्य जागरूकता, पोषण, स्वच्छता और preventive healthcare के माध्यम से महिलाओं की क्षमता को मजबूत कर सकते हैं। PRAVAH के कार्यक्रमों में health and nutrition को tribal और vulnerable communities के लिए महत्वपूर्ण intervention area के रूप में रखा गया है।

कानूनी जागरूकता एवं अधिकार संरक्षण

महिलाओं को घरेलू हिंसा, बाल विवाह, संपत्ति अधिकार, सरकारी योजनाओं और कानूनी सहायता की जानकारी देना empowerment का महत्वपूर्ण हिस्सा है। NGOs स्थानीय भाषा एवं समुदाय आधारित जागरूकता के माध्यम से इस अंतर को कम कर सकते हैं।

राजनीतिक जागरूकता एवं नेतृत्व विकास

SHG participation और political empowerment पर झारखण्ड आधारित अध्ययन में voting rights, government schemes की awareness, political participation और leadership positions में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामूहिक संगठन आर्थिक गतिविधियों से आगे बढ़कर राजनीतिक agency भी विकसित कर सकते हैं।

सामाजिक जागरूकता एवं लैंगिक समानता

NGOs gender equality, महिलाओं की mobility, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक अधिकारों से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम चला सकते हैं। सामाजिक norms में परिवर्तन दीर्घकालीन प्रक्रिया है और इसमें community-level engagement आवश्यक है।

सरकारी योजनाओं एवं सुविधाओं तक पहुँच में भूमिका

ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी और आवेदन प्रक्रिया समझने में कठिनाई हो सकती है। NGOs information dissemination, documentation assistance और community mobilisation के माध्यम से इस gap को कम कर सकते हैं। PRADAN Foundation भी समुदाय और government services के बीच connection मजबूत करने को अपने कार्यों का हिस्सा बताता है।

उद्यमिता एवं बाजार से जुड़ाव

उत्पादन करना और उत्पाद को बाजार तक पहुँचाना दो अलग प्रक्रियाएँ हैं। महिलाओं के उद्यम को टिकाऊ बनाने के लिए market linkage, branding, value addition और business skills आवश्यक हैं। PRADAN की LEAP पहल में livelihoods, market access और women empowerment को जोड़ा गया था तथा छोटे महिला किसानों को बाजार आधारित आजीविका से जोड़ने का उद्देश्य रखा गया था।

सामुदायिक सहभागिता एवं सामूहिक कार्रवाई

NGOs का सबसे महत्वपूर्ण योगदान community mobilisation हो सकता है। जब महिलाएँ स्वयं सहायता समूह, village organisations या federations के माध्यम से सामूहिक रूप से संगठित होती हैं, तो वे स्थानीय समस्याओं पर सामूहिक कार्रवाई करने की क्षमता विकसित कर सकती हैं। SAFALTA में village organisations और महिला संस्थाओं को मजबूत करने का लक्ष्य इसी प्रकार की collective capacity को दर्शाता है।

NGOs की गतिविधियों का आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रभाव

NGOs के हस्तक्षेपों का मूल्यांकन केवल यह देखकर नहीं किया जाना चाहिए कि कितनी महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया, बल्कि यह देखकर किया जाना चाहिए कि उन गतिविधियों से महिलाओं की agency और वास्तविक जीवन के विकल्प कितने बढ़े।

आर्थिक स्वतंत्रता

आजीविका और उद्यमिता कार्यक्रम महिलाओं को स्वयं की आय अर्जित करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। SHGs के माध्यम से बचत एवं ऋण तक पहुँच आर्थिक vulnerability को कम करने में सहायता कर सकती है।

आत्मनिर्भरता

कौशल और आय के अवसर महिलाओं को दूसरों पर आर्थिक निर्भरता कम करने में सहायता करते हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता सामाजिक निर्णयों में भागीदारी की संभावना भी बढ़ाती है।

आत्मविश्वास में वृद्धि

Mahato और Jha के 2024 के अध्ययन में SHG participation के बाद tribal women में self-esteem, self-confidence और self-efficacy में सकारात्मक बदलाव पाया गया।

परिवार में निर्णय लेने की क्षमता

जब महिलाओं की आय, वित्तीय जानकारी और सामाजिक networks बढ़ते हैं, तो परिवार में उनकी bargaining position मजबूत हो सकती है। यह empowerment का महत्वपूर्ण परिणाम है।

सामाजिक प्रतिष्ठा

आर्थिक गतिविधियों, सामुदायिक नेतृत्व और सार्वजनिक सहभागिता में महिलाओं की भूमिका बढ़ने से परिवार एवं समुदाय में उनकी सामाजिक पहचान मजबूत हो सकती है।

राजनीतिक सहभागिता

SHG participation को political awareness, voting participation और leadership से जोड़ने वाले झारखण्ड-आधारित empirical evidence उपलब्ध हैं।

नेतृत्व क्षमता

Federations, village organisations और community institutions महिलाओं को सार्वजनिक बोलने, निर्णय लेने और सामूहिक समस्याओं पर कार्य करने का अवसर देते हैं।

अधिकारों के प्रति जागरूकता

कानूनी एवं सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी महिलाओं को welfare recipients से अधिकार-आधारित नागरिक की ओर ले जाने में सहायक हो सकती है।

जीवन स्तर में सुधार

आय, स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और सामाजिक सहभागिता में सुधार मिलकर household और individual quality of life को प्रभावित कर सकते हैं।

तालिका 2: NGOs के हस्तक्षेप एवं आदिवासी महिला सशक्तिकरण पर उनके प्रमुख प्रभाव

NGO हस्तक्षेप	सशक्तिकरण का आयाम	संभावित/प्रमुख प्रभाव
शिक्षा एवं साक्षरता	शैक्षिक एवं सामाजिक	ज्ञान एवं जागरूकता
कौशल विकास	आर्थिक	रोजगार एवं आय के अवसर
आजीविका कार्यक्रम	आर्थिक	आय एवं आत्मनिर्भरता
स्वयं सहायता समूह	आर्थिक एवं सामाजिक	बचत, सामूहिकता एवं agency
वित्तीय समावेशन	आर्थिक	बैंकिंग एवं ऋण तक पहुँच
स्वास्थ्य एवं पोषण	सामाजिक	स्वास्थ्य जागरूकता
कानूनी जागरूकता	सामाजिक/कानूनी	अधिकारों की जानकारी
राजनीतिक जागरूकता	राजनीतिक	सहभागिता एवं नेतृत्व
सरकारी योजनाओं से जुड़ाव	सामाजिक/आर्थिक	संस्थागत सेवाओं तक पहुँच
उद्यमिता एवं बाजार	आर्थिक	स्वरोजगार एवं आय वृद्धि
सामुदायिक संगठन	सामाजिक/राजनीतिक	collective action एवं नेतृत्व

स्रोत: उपलब्ध empirical studies तथा PRADAN और PRAVAH के प्रकाशित कार्यक्रम दस्तावेजों का विश्लेषण।

साहित्य समीक्षा

झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण और NGOs की भूमिका से संबंधित साहित्य को broadly चार भागों में देखा जा सकता है— शिक्षा, स्वयं सहायता समूह, आर्थिक सशक्तिकरण और राजनीतिक/मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण।

Banerjee के 2023 के अध्ययन ने झारखण्ड में tribal women की education और empowerment में NGOs की भूमिका पर चर्चा की। अध्ययन में शिक्षा को बाल विवाह, trafficking तथा अन्य सामाजिक समस्याओं से निपटने और महिलाओं के empowerment के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखा गया है।

Kumari और Pandey के अध्ययन ने झारखण्ड की Scheduled Tribe girls के educational development में NGOs की भूमिका का परीक्षण किया और यह रेखांकित किया कि NGOs उन दूरस्थ एवं हाशिए के समुदायों तक पहुँच बना सकते हैं जहाँ सरकारी सेवाओं की पहुँच सीमित हो सकती है।

Mahato और Jha (2024) ने झारखण्ड की rural tribal women पर SHG participation के psychological empowerment प्रभाव का empirical परीक्षण किया। Multistage random sampling और propensity score matching के माध्यम से किए गए अध्ययन में self-esteem, self-confidence, self-efficacy, autonomy, knowledge और skills में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि SHG participation को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं बल्कि psychological empowerment के माध्यम के रूप में भी देखा जा सकता है।

इसी प्रकार Mahato और Jha (2025) के राजनीतिक empowerment संबंधी अध्ययन में SHG participation को voting rights, government schemes की awareness, political awareness, electoral participation और leadership positions में सुधार से जोड़ा गया। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन में NGOs और सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से विकसित होने वाली राजनीतिक agency को समझने के लिए उपयोगी है।

2025 के एक अध्ययन ने झारखण्ड में tribal women के आर्थिक empowerment के संदर्भ में SHGs की भूमिका का अध्ययन करते हुए income generation, savings behaviour, decision-making power और financial resources तक पहुँच को प्रमुख indicators के रूप में लिया। अध्ययन ने SHG participation और economic stability के बीच सकारात्मक संबंध की ओर संकेत किया, हालांकि market access और financial literacy जैसी चुनौतियों को भी रेखांकित किया। हालांकि, आर्थिक empowerment को केवल आय या ऋण तक सीमित करने के बजाय निर्णय लेने की क्षमता और बाजार से जुड़ाव के संदर्भ में देखना अधिक व्यापक दृष्टिकोण होगा।

झारखण्ड में SHGs के व्यापक प्रभाव पर उपलब्ध अन्य empirical research भी women empowerment के विभिन्न dimensions को examine करता है। उदाहरण के लिए Verma, Sinha और Kumar के अध्ययन ने 215 महिलाओं के survey के आधार पर SHGs और women empowerment के संबंध का विश्लेषण किया।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा, SHGs, आजीविका, आर्थिक empowerment और राजनीतिक participation पर अलग-अलग अध्ययन उपलब्ध हैं। विशेष रूप से हालिया empirical studies ने SHGs के psychological और political empowerment पर महत्वपूर्ण evidence उपलब्ध कराया है। हालाँकि, इन अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा SHGs या किसी एक empowerment dimension पर केंद्रित है। NGOs की व्यापक भूमिका—जिसमें शिक्षा, कौशल, livelihood, SHGs, स्वास्थ्य, कानूनी जागरूकता, सरकारी योजनाओं तक पहुँच, उद्यमिता और political leadership को एक साथ देखा जाए—पर समेकित अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इसलिए वर्तमान अध्ययन का शोध अंतराल यह है कि NGOs को एक grassroots institutional actor के रूप में लेते हुए झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण में उनकी बहुआयामी भूमिका का समेकित विश्लेषण किया जाए।

शोध के उद्देश्य

- झारखण्ड में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
- आदिवासी महिला सशक्तिकरण की अवधारणा एवं उसके विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना।
- झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण के लिए NGOs द्वारा किए जा रहे प्रमुख हस्तक्षेपों का अध्ययन करना।
- NGOs की गतिविधियों के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण से संबंधित संभावित प्रभावों एवं उपलब्ध empirical evidence का विश्लेषण करना।
- NGOs के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना तथा महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण

में गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) की भूमिका का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। अध्ययन में आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य संबंधी तथा राजनीतिक स्थिति के साथ-साथ उनके सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किए जा रहे हस्तक्षेपों का अध्ययन किया गया है। शोध में यह समझने का प्रयास किया गया है कि उपलब्ध साहित्य एवं संस्थागत दस्तावेजों के आधार पर NGOs द्वारा किए जाने वाले हस्तक्षेप आदिवासी महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण से किस प्रकार जुड़े हुए हैं।

इस अध्ययन की प्रमुख सीमा द्वितीयक स्रोतों पर निर्भरता और प्राथमिक क्षेत्र-डेटा का अभाव है। इस अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़े सरकारी रिपोर्टों, जनगणना एवं आधिकारिक सांख्यिकीय दस्तावेजों, शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध लेखों, पुस्तकों, शोध प्रबंधों, नीति दस्तावेजों तथा संबंधित संस्थागत एवं NGO reports से प्राप्त किए गए हैं। झारखण्ड की अनुसूचित जनजातियों की शैक्षिक स्थिति के विश्लेषण के लिए Census of India की ST-08 एवं C-08 tables को आधार बनाया गया है। इसके अतिरिक्त झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं, महिला सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूहों, ग्रामीण आजीविका तथा NGOs की भूमिका से संबंधित पूर्व प्रकाशित empirical studies का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से SHG participation और psychological तथा political empowerment पर उपलब्ध झारखण्ड-आधारित अध्ययनों का उपयोग NGO interventions के संभावित empowerment outcomes को समझने के लिए किया गया है।

झारखण्ड में NGOs के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

NGOs की भूमिका महत्वपूर्ण होने के बावजूद उनके सामने कई संरचनात्मक चुनौतियाँ मौजूद रहती हैं।

- **वित्तीय संसाधनों की कमी:** अनेक NGOs donor funding तथा project-based financing पर निर्भर रहते हैं। इससे दीर्घकालीन programmes की निरंतरता प्रभावित हो सकती है।
- **दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों तक पहुँच:** झारखण्ड के अनेक ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में भौगोलिक दूरी तथा परिवहन संबंधी कठिनाइयाँ programme delivery को प्रभावित करती हैं।
- **अशिक्षा एवं जागरूकता की कमी:** शिक्षा और information gap के कारण महिलाओं को programme participation के लिए mobilise करना कठिन हो सकता है।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ:** gender norms, महिलाओं की mobility तथा पारिवारिक जिम्मेदारियाँ programme participation को प्रभावित कर सकती हैं।
- **सरकारी संस्थाओं से समन्वय की समस्या:** NGOs के कार्यक्रमों की स्थिरता के लिए पंचायत, विभागीय संस्थाओं और livelihood missions के साथ बेहतर coordination आवश्यक है।
- **प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी:** स्थानीय भाषा और संस्कृति को समझने वाले प्रशिक्षित field workers की उपलब्धता महत्वपूर्ण है।
- **बाजार की समस्या:** महिलाओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं को स्थानीय बाजार से आगे बड़े बाजारों तक पहुँचाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **कार्यक्रमों की निरंतरता:** short-term projects के समाप्त होने के बाद community institutions की sustainability एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।
- **डिजिटल विभाजन:** digital banking, online applications और digital marketing के विस्तार के बावजूद ग्रामीण महिलाओं की digital literacy सीमित हो सकती है।
- **निगरानी एवं मूल्यांकन:** NGO programmes की सफलता को केवल beneficiary numbers से नहीं बल्कि long-term empowerment outcomes से मापना आवश्यक है।

प्रमुख निष्कर्ष एवं विमर्श

अध्ययन के आधार पर पहला प्रमुख निष्कर्ष यह है कि महिला सशक्तिकरण बहुआयामी प्रक्रिया है। केवल आय में वृद्धि को पूर्ण empowerment नहीं माना जा सकता। आर्थिक संसाधनों के साथ decision-making, social participation, political awareness और

psychological confidence भी आवश्यक हैं।

SHGs NGOs तथा community institutions के बीच महत्वपूर्ण connecting mechanism के रूप में कार्य कर सकते हैं। झारखण्ड पर उपलब्ध empirical evidence यह दर्शाता है कि SHG participation psychological empowerment में सकारात्मक बदलाव से जुड़ी है।

Empowerment का प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र तक भी विस्तारित हो सकता है। उपलब्ध अध्ययन में SHG participation के बाद political awareness, voting participation, government schemes की जानकारी तथा leadership positions में सुधार पाया गया।

NGOs की grassroots presence उन्हें सरकारी योजनाओं और स्थानीय महिलाओं के बीच facilitator की भूमिका निभाने का अवसर देती है। PRADAN और PRAVAH जैसे संगठनों की प्रकाशित programme information में livelihood, SHGs, financial linkage, health, nutrition और women leadership जैसे क्षेत्रों पर interventions दिखाई देते हैं।

NGO interventions की सफलता केवल programme participation से निर्धारित नहीं होनी चाहिए। यह भी देखना आवश्यक है कि intervention के बाद महिलाओं की वास्तविक agency, आय, निर्णय क्षमता और सामुदायिक नेतृत्व में कितना परिवर्तन आया।

market access और financial literacy जैसी समस्याएँ आर्थिक empowerment को सीमित कर सकती हैं। इसलिए livelihood programme को training के साथ market linkage, financial literacy और enterprise development से जोड़ना आवश्यक है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रस्तुत अध्ययन में NGO interventions के प्रभावों का आकलन मुख्यतः उपलब्ध द्वितीयक स्रोतों और पूर्व प्रकाशित empirical studies के आधार पर किया गया है। अतः अध्ययन में प्रस्तुत प्रभावों को प्रत्यक्ष causal findings के रूप में नहीं, बल्कि उपलब्ध साहित्य से प्राप्त evidence और analytical interpretation के रूप में समझा जाना चाहिए।

निष्कर्ष

झारखण्ड में आदिवासी महिला सशक्तिकरण एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसे केवल आर्थिक सहायता या रोजगार उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं किया जा सकता। शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य, आजीविका, वित्तीय समावेशन, सामाजिक जागरूकता, कानूनी अधिकार, राजनीतिक सहभागिता तथा मनोवैज्ञानिक आत्मविश्वास—सभी मिलकर महिला सशक्तिकरण की व्यापक प्रक्रिया का निर्माण करते हैं।

इस संदर्भ में NGOs grassroots स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनकी विशेषता समुदाय के साथ प्रत्यक्ष संपर्क, स्थानीय आवश्यकताओं की समझ, सामुदायिक संगठन और capacity building में निहित है। झारखण्ड में SHGs, livelihood promotion, financial linkage, health and nutrition तथा women leadership से जुड़े NGO interventions इस दिशा में महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। PRADAN और PRAVAH की प्रकाशित पहलों से भी यह स्पष्ट होता है कि NGO interventions को livelihood, community institutions और women leadership के साथ जोड़ा जा रहा है। उपलब्ध empirical research यह भी संकेत करता है कि SHG participation tribal women के psychological empowerment और political participation पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। फिर भी NGOs को महिला सशक्तिकरण का अकेला समाधान नहीं माना जा सकता। सरकार, पंचायत, NGOs, वित्तीय संस्थाओं और स्थानीय समुदायों के बीच प्रभावी समन्वय आवश्यक है। विशेष रूप से programmes को short-term welfare approach से आगे बढ़ाकर long-term agency, economic independence और collective leadership पर केंद्रित करना होगा। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि झारखण्ड में NGOs आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सहायक, मध्यस्थ और क्षमता-विकासकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यदि NGO interventions को स्थानीय संस्कृति, महिलाओं की वास्तविक आवश्यकताओं, बाजार, वित्तीय समावेशन और सरकारी संस्थागत सहयोग के साथ जोड़ा जाए, तो वे आदिवासी महिलाओं को केवल योजनाओं की लाभार्थी बनाने के बजाय विकास प्रक्रिया की सक्रिय भागीदार और निर्णयकर्ता बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बनर्जी, ए. (2023)। एम्पावरिंग ट्राइबल विमेन थ्रू एजुकेशन इन झारखण्ड: रोल ऑफ एनजीओज़। प्रथम राष्ट्रीय सेमिनार, स्टडी ऑफ द एजुकेशनल स्टेटस/डेवलपमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन इन झारखण्ड इन द प्रेजेंट सिनेरियो, कोयलांचल चैरिटेबल फाउंडेशन, धनबाद, झारखण्ड, 24 सितंबर 2023।
2. चौधरी, ए. के., एवं टिग्गा, ए. डी. (2023)। रोल ऑफ एनजीओज़ इन द अपलिफ्टमेंट ऑफ ट्राइबल्स इन झारखण्ड। इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एप्लाइड साइंस एंड इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी (आईजेआरएएसईटी)। <https://doi.org/10.22214/ijraset.2023.53895>
3. कबीर, एन. (1999)। रिसोर्सेज, एजेंसी, अचीवमेंट्स: रिफ्लेक्शंस ऑन द मेजरमेंट ऑफ विमेन्स एम्पावरमेंट। डेवलपमेंट एंड चेंज, 30(3), 435-464। <https://doi.org/10.1111/1467-7660.00125>
4. काकाती, बी. के., एवं काकोटी, एस. (2022)। रोल ऑफ विमेन्स कोऑपरेटिव इन एम्पावरिंग विमेन: ए स्टडी इन झारखण्ड। पुरुषार्थ: ए जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, एथिक्स एंड स्परिचुअलिटी, 15(1)। <https://doi.org/10.21844/16202115109>
5. कामार, एन., एवं कुमारी, जे. (2025)। इकोनॉमिक एम्पावरमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन थ्रू सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स इन झारखण्ड। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेज इन इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट, 7(4), 1178-1181। <https://doi.org/10.35629/5252-070411781181>
6. कुमार, आर. (2021)। झारखण्ड के आंदोलनों एवं संघर्षों में आदिवासी महिलाओं की सहभागिता। स्कॉलर्ली रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज़, 10(52), 138-142।
7. कुमार, टी. (2026)। द रोल ऑफ विमेन्स कलेक्टिव्स इन एडवांसिंग रूरल सस्टेनेबिलिटी: एन असेसमेंट ऑफ जेएसएलपीएस इंटरवेंशन्स इन झारखंड'स ट्राइबल एरियाज़। द एकेडमिक - इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 4(1), 1155-1167। डीओआई: 10.5281/ज़ेनोडो.18643273
8. कुमारी, जी., रत्नेश, एम., एवं एगुरुज़े, ई. एस. (2020)। रोल ऑफ सीएसआर इन सपोर्टिंग ट्राइबल हैंडीक्राफ्ट्स ऑफ झारखण्ड। जर्नल ऑफ क्रिटिकल रिव्यूज़, 7(4)। <https://doi.org/10.31838/jcr.07.04.12>
9. कुमारी, एस. (2025)। जनजातीय महिलाओं में शिक्षा एवं रोजगार संबंधी प्रवास: राँची जिला के संदर्भ में एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर), 7(5), 1-10।
10. कुमारी, एस., एवं गुप्ता, एस. के. (2025)। झारखंड के उराँव समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में बदलाव। जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलर्ली रिसर्चेज़ इन एप्लाइड एजुकेशन, 22(3), 501-510। <https://doi.org/10.29070/trdbvd88>
11. कुमारी, एस., एवं पाण्डेय, ए. (2013)। रोल ऑफ एनजीओज़ इन द एजुकेशनल डेवलपमेंट ऑफ शेड्यूल्ड ट्राइब गर्ल्स ऑफ झारखण्ड। नेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, 12(1), 81-87।
12. महतो, टी., एवं झा, एम. के. (2024)। डज़ पार्टिसिपेशन इन सेल्फ-हेल्प ग्रुप अफेक्ट द साइकोलॉजिकल एम्पावरमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन? एविडेंस फ्रॉम इंडिया। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डेवलपमेंट इश्यूज़, 23(3), 447-462। <https://doi.org/10.1108/IJDI-11-2023-0265>
13. महतो, टी., एवं झा, एम. के. (2025)। डज़ पार्टिसिपेशन इन सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स अफेक्ट द पॉलिटिकल एम्पावरमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन? एविडेंस फ्रॉम इंडिया। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स, 52(3), 359-374। <https://doi.org/10.1108/IJSE-06-2023-0489>
14. मन्ना, ए. (2024)। एम्पावरमेंट एंड जेंडर इक्विटी अमंग ट्राइबल विमेन। इंटीग्रेटेड जर्नल फॉर रिसर्च इन आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज़, 4(1), 11-17। <https://doi.org/10.55544/ijrah.4.1.2>
15. मरांडी, आई. (2017)। पॉलिटिकल कंडीशन एंड डायरेक्शन ऑफ ट्राइबल विमेन ऑफ झारखण्ड। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड इनोवेटिव आइडियाज़ इन एजुकेशन (आईजेआरआईआई), 3(1), 2086-2090।
16. मोहंती, बी., एवं मित्रा, आर. (2026)। एम्पावरिंग ट्राइबल विमेन थ्रू अपस्किंग, फाइनेंशियल इन्क्लूज़न एंड सस्टेनेबल लाइवलीहुड्स: एविडेंस फ्रॉम झारखण्ड एंड ओडिशा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, 14(6), 530-536।
17. पांडेय, के., एवं कुमारी, ए. (2023)। त्रिजिंग द गैप - चैलेंजेज़ एंड प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ ट्राइबल विमेन्स पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन अंडर पीईएसए इन झारखंड। इनोवेशन एंड इंटीग्रेटिव रिसर्च सेंटर जर्नल, 1(4), 46-54।

18. पाल, आर. के. (2024)। इकोनॉमिक सेल्फ-रिलायंस ऑफ ट्राइबल विमेन ऑफ धालभूमगढ़ ब्लॉक, झारखण्ड: पाँसिबिलिटीज एंड चैलेंजेज।
जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), 11(2), 679–690।
19. पॉल, आर. के., एवं सामल, ए. (2023)। कॉन्ट्रिब्यूशन ऑफ रूरल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स इन एम्पावरमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन: ए केस स्टडी।
इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 5(5)। डीओआई: 10.36948/आईजेएफएमआर.2023.वी05आई05.5894
20. पाल, आर. के. (2024)। लैंगिक हिंसा और महिलाओं के सशक्तिकरण: धालभूमगढ़ प्रखण्ड, झारखंड की आदिवासी महिलाओं का एक अध्ययन।
इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), 11(3), 189–195।
21. पॉल, आर. (2022)। झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन। जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलर्ली
रिसर्चेज इन एलाइड एजुकेशन, 19(6), 187–192।
22. राम, एन. (2025)। ए सोशियोलॉजिकल एनालिसिस ऑफ द करंट कंडीशंस एंड चैलेंजेज ऑफ ओरांव ट्राइबल विमेन: विद स्पेशल रेफरेंस टू
गढ़वा डिस्ट्रिक्ट ऑफ झारखण्ड स्टेट। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आईजेसीआरटी), 13(5), 236–241।
23. सेन, ए. (1999)। डेवलपमेंट एज फ्रीडम। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
24. सिन्हा, आर., कुमार, आर., एवं वर्मा, जे. पी. (2020)। इफेक्ट ऑफ सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स (एसएचजीज़) ऑन विमेन एम्पावरमेंट: एन एम्पिरिकल
एविडेंस ऑफ झारखण्ड। भूटान हुआतान जिशुआन जिशु, XVI(XII), 1505–1523।
25. सुकीजा, के., एवं मिश्रा, पी. (2024)। बैरियर्स टू एजुकेशन एंड स्किल एक्विजिशन अमंग ट्राइबल विमेन ऑफ झारखण्ड। इंटरनेशनल जर्नल
ऑफ रिव्यूज एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 12(4), 244–252। <https://doi.org/10.52711/2454-2687.2024.00041>
26. टोप्पो, एन., एवं कुजूर, आर. पी. (2026)। रोल ऑफ सेल्फ-हेल्प ग्रुप्स इन फाइनेंशियल एम्पावरमेंट ऑफ ट्राइबल विमेन इन झारखण्ड।
इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च कल्चर सोसाइटी, 10(3), 36–42।

COPYRIGHT:

© 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>